

हिंद महासागर एक नई नीली अर्थव्यवस्था का पालना: भारत के नेतृत्व का क्षण

UPSC प्रारंभिकता:

- **GS II:** UNCLOS (समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र अधिसमिय), BBNJ (राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार से परे जैव विविधता समझौता), SAGAR, हिंद-प्रशांत, क्षेत्रीय नेतृत्व
- **GS III:** नीली अर्थव्यवस्था (Blue Economy), जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन।

खबर में क्यों?

ब्रायीलिया में COP30 (2025), तीसरा संयुक्त राष्ट्र महासागर सम्मेलन (UNOC3), वैश्विक नीली अर्थव्यवस्था वित्त में वृद्धि, और राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार से परे जैव विविधता (BBNJ) समझौते का 2026 में लागू होना—इन सभी कारकों के कारण महासागर शासन (Ocean Governance) अब वैश्विक जलवायु और विकास विमर्श का केंद्रीय स्तंभ बन गया है। इस संदर्भ में, एक सतत और सहकारी हिंद महासागर व्यवस्था को आकार देने में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका का महत्व एक बार फिर बढ़ गया है।



पृष्ठभूमि: भारत का महासागरीय दृष्टिकोण और मानक नेतृत्व

- **न्याय और समानता पर आधारित दृष्टिकोण:** महासागर शासन में भारत की भागीदारी ऐतिहासिक रूप से समानता और न्याय पर आधारित रही है।
- **UNCLOS में भूमिका:** 1970 और 1980 के दशक के UNCLOS वार्ताओं के दौरान, भारत ने छोटे और संवेदनशील द्वीपीय राष्ट्रों के साथ गठबंधन किया। भारत ने इस बात की वकालत की कि राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार से परे समुद्री तल (seabed beyond national jurisdiction) को "मानवजाति की साझी विरासत" (Common Heritage of Mankind) माना जाए। इस रूप से शक्ति की राजनीति के बजाय निष्पक्षता के प्रति भारत की प्राथमिकता को दर्शाया।
- **नेहरू का प्रारंभिक विज्ञन:** 1950 के दशक की शुरुआत में ही जवाहरलाल नेहरू ने यह पहचान लिया था कि भारत की सुरक्षा और समृद्धि महासागरों से अविभाज्य है। समय के साथ, इस दृष्टिकोण ने भारत को एक समुद्री राष्ट्र और एक समुद्री नेता के रूप में स्थापित किया।
- **बदला हुआ संदर्भ:** हालाँकि, महासागरीय संदर्भ नाटकीय रूप से बदल गया है। जलवायु परिवर्तन, महासागर का गर्म होना और अम्लीकरण, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि और अवैध मत्स्यन (Illegal Fishing) अब ऐसे प्रणालीगत जोखिम पैदा करते हैं जिनकी UNCLOS युग के दौरान कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

हिंद महासागर: रणनीतिक केंद्र बिंदु और जलवायु भेदाता

- जनसंख्या और व्यापारिक महत्व:** हिंद महासागर विश्व की एक-तिहाई जनसंख्या का घर है और महत्वपूर्ण वैश्विक व्यापार तथा ऊर्जा प्रवाह का वठन करता है।
- जलवायु भेदाता:** यह सबसे अधिक जलवायु-संप्रेदनशील महासागरीय बेसिनों में से एक है।
- सुरक्षा का विषय:** इस क्षेत्र में पर्यावरणीय तनाव खाद्य सुरक्षा, आजीविका, आपदा जोखिमों और क्षेत्रीय स्थिरता को सीधे प्रभावित करता है, जिससे सतत महासागर शासन एक रणनीतिक आवश्यकता बन जाता है।

भारत की नीती महासागर रणनीति: तीन रणनीतिक स्तंभ

1. साझी संपदा (Commons) का दायित्व

भारत को लगातार यह दृढ़ता से कठना चाहिए कि हिंद महासागर एक साझा स्थान है, न कि कोई विवादित अखाड़ा। निम्नलिखित को प्राथमिकता देकर:

- पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली (Ecosystem restoration)
- जैव विविधता का संरक्षण
- सतत मत्स्यन (Sustainable fisheries)
भारत वैश्विक साझी संपदा के सहकारी प्रबंधन को बढ़ावा दे सकता है और प्रतिस्पर्धात्मक अतिनिष्कर्षण (competitive over-extraction) को हटोत्साहित कर सकता है।



2. क्षेत्रीय लचीलापन (Regional Resilience) का निर्माण

चौंक जलवायु जोखिम बढ़ते जा रहे हैं, भारत एक क्षेत्रीय लचीलापन और महासागर नवाचार केंद्र (Regional Resilience and Ocean Innovation Hub) स्थापित करके नेतृत्व कर सकता है, जिसका ध्यान इन बातों पर होगा:

- महासागर अवलोकन नेटवर्क को मजबूत करना। 9235313184, 9235440806
- पूर्व-योतावनी प्रणालियों में सुधार करना
- छोटे द्वीपीय विकासशील राष्ट्रों (SIDS) और अफ्रीकी तटीय देशों को प्रौद्योगिकी उत्पादन को सक्षम बनाना

3. समावेशी नीती वृद्धि (Inclusive Blue Growth)

हिंद महासागर को सभी तटवर्ती (littoral) राज्यों के लिए साझी समृद्धि का चालक बनना चाहिए। मुख्य क्षेत्र जिनमें विकास करना है, वे हैं:

- ग्रीन शिपिंग (Green shipping)
- अपतटीय नवीकरणीय ऊर्जा (Offshore renewable energy)
- सतत जलीय कृषि (Sustainable aquaculture)
- समुद्री जैव प्रौद्योगिकी (Marine biotechnology)
ये यात्रे आर्थिक विकास को जलवायु लक्ष्यों के साथ सेरेखित करते हैं, बशर्ते निरंतर निवेश और क्षेत्रीय समन्वय बना रहे।

एक सतत हिंद महासागर व्यवस्था के समक्ष चुनौतियाँ

- जलवायु-प्रेरित महासागर क्षरण:** महासागर का गर्म होना, अम्लीकरण और समुद्र के जलस्तर में वृद्धि समुद्री परिस्थितिकी तंत्र को कमज़ोर कर रही हैं।
- अवैध, असूचित और अनियमित (IUU) मत्स्यन:** IUU मत्स्यन मछली भंडार को घटा रहा है। यह पूरे क्षेत्र में तटीय आजीविका, खाद्य सुरक्षा और सामाजिक स्थिरता को नष्ट कर रहा है।
- महासागर विमर्श का अति-सैन्यीकरण:** हिंद महासागर की बहसें नौसैनिक संतुलन, नौवहन की स्वतंत्रता और हिंद-प्रशांत प्रतिटिंडिता के प्रभुत्व में रहती हैं। यह ढाँचा इस वास्तविकता को छुपाता है कि पारिस्थितिकी तंत्र का पतन और जलवायु व्यवधान असुरक्षा के प्राथमिक कारक हैं।
- जलवायु वित में महासागरों की ऐतिहासिक उपेक्षा:** महासागर लंबे समय से वैश्विक जलवायु वित में हाशिए पर रहे हैं।
- क्षेत्रीय कार्रवाई के लिए कमज़ोर संस्थागत वास्तुकला:** हिंद महासागर की प्राथमिकताओं के लिए वैश्विक वित को व्यवस्थित रूप से पहुँचाने हेतु कोई समर्पित तंत्र नहीं है।
- कमज़ोर राज्यों में क्षमता अंतराल:** छोटे द्वीपीय विकासशील राष्ट्रों (SIDS) और अफ्रीकी तटीय राष्ट्रों में उन्नत प्रौद्योगिकी, निगरानी प्रणालियों और अनुकूलन क्षमता की कमी है।
- कथन (Rhetoric) और कार्यान्वयन में अंतर:** केंद्रीय चुनौती विष्ट को वित के साथ सेरेखित करना है।

ब्लू डकोनॉमी वित: उभरती सकारात्मकता

- BEFF, मोनाको (जून 2025):** €25 अरब निवेश पाइपलाइन; €8.7 अरब नई प्रतिबद्धताएँ
- Finance in Common Ocean Coalition:** 20 सार्वजनिक विकास बैंक; वार्षिक \$7.5 अरब
- लैटिन अमेरिका विकास बैंक:** लक्ष्य \$2.5 अरब (2030)
- COP30 (बोलोम):** One Ocean Partnership — 2030 तक \$20 अरब संकेत: महासागर अब वैश्विक जलवायु वित के केंद्र में।



स्थिरता के माध्यम से सुरक्षा: भारत का रणनीतिक ढाँचा

- समुद्री सुरक्षा पर्यावरण स्थिरता से अलग नहीं हो सकती :** IUU मत्स्यन, प्रवाल भित्ति का क्षरण और जलवायु झटके सीधे आजीविका और सामाजिक व्यवस्था को कमज़ोर करते हैं, जिसके लिए "स्थिरता के माध्यम से सुरक्षा" (Security through Sustainability) की ओर बदलाव आवश्यक है।
- SAGAR सिद्धांत:** भारत का विष्टकोण SAGAR सिद्धांत (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) पर आधारित है, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मॉरीशस (2015) में प्रतिपादित किया था, जो हिंद महासागर को शांति, स्थिरता और समृद्धि के क्षेत्र के रूप में देखता है।

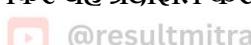
- परिचालन:** भारतीय नौसेना और तटरक्षक बल, नागरिक एजेंसियों के साथ मिलकर, समुद्री डोमेन जागरूकता, आपदा प्रतिक्रिया, और पारिस्थितिकी तंत्र निगरानी को मजबूत कर सकते हैं।
- सहकारी दृष्टिकोण:** विदेश मंत्री एस. जयशंकर के अनुसार, भारत का दृष्टिकोण "सहकारी, परामर्शकारी और परिणाम-उन्मुख" है।

भारत की ऐतिहासिक जिम्मेदारी और आगे की गड़ी

- UNCLOS से लेकर समकालीन जलवायु मंचों तक महासागर कूटनीति में भारत की विश्वसनीयता उसे नेतृत्व की जिम्मेदारी देती है। UNOC3, COP30, और BBNJ समझौता (2026) के एक साथ आने से, BBNJ की पुष्टि के लिए भारत की तत्परता इन पहलों में अग्रणी बनने का अवसर प्रदान करती है:
 - ब्रीन शिपिंग कॉरिडोर
 - ब्लू बॉन्ड (Blue Bonds)
 - समावेशी समुद्री प्रौद्योगिकी हस्तांतरण
 - सावधानीपूर्वक नियंत्रित महासागर-आधारित कार्बन डाइऑक्साइड निष्कासन (carbon dioxide removal)
- इंडियन ओशन ब्लू फंड:** इस एजेंडे को संस्थागत बनाने के लिए, भारत को एक इंडियन ओशन ब्लू फंड स्थापित करना चाहिए, जिसकी शुरुआत भारत करे और जो विकास बैंकों, परोपकार तथा निजी पूँजी के लिए खुला हो। यह सुनिश्चित करेगा कि घोषणाएँ परियोजनाओं में बदल जाएँ।

निष्कर्ष

हिंद महासागर—प्राचीन सभ्यताओं का पालना—अब एक नई नीली अर्थव्यवस्था का पालना बन सकता है, जो समृद्धि को स्थिरता और लचीलेपन को न्याय के साथ पुनः सामंजस्य स्थापित करेग। यदि भारत महत्वाकांक्षा, विनम्रता और समावेशिता के साथ नेतृत्व करता है, तो हिंद महासागर एक बार फिर यह प्रदर्शित कर सकता है कि संघर्ष पर सहयोग, और प्रतिकूलिता पर एकजुटता हावी हो सकती है।



@resultmitra



www.resultmitra.com



9235313184, 9235440806



UPSC मुख्य परीक्षा अभ्यास प्र०९

प्र. “हिंद महासागर में समुद्री सुरक्षा का भविष्य केवल नौसैनिक प्रभुत्व में नहीं, बल्कि स्थिरता-प्रेरित सहयोग में निहित है” इस संदर्भ में, एक सतत, समावेशी और सहकारी हिंद महासागर व्यवस्था को आकार देने में भारत की भूमिका का परीक्षण कीजिए। प्रमुख चुनौतियों पर चर्चा करते हुए आगे की यह सुझाइए। (250 शब्द)

IAS-PCS Institute



@resultmitra



www.resultmitra.com



9235313184, 9235440806

